IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 6, Issue 2, February 2026

Impact Factor: 8.2

vu|lfpr tkfr dh efgykvk dh lkekftd pukfr;k|

Mk- 'kkgsnk flíhdh

,lkfl,V ik/;kid] lekt'kkL=

'kkldh; Bkdj j.ker flg egkfo|ky;] jhok ¼e-i-½

'kk/k lkjka'k %&

सामाजिक श्रृंखला की प्रमुख कड़ी महिलाएँ हैं जिनके ऊपर परिवार, समाज, संस्कृति और सभ्यता का परोक्ष और अपरोक्ष भार रहता है जिसके निर्वहन के सपने महिलाएँ हर समय देखती रहती हैं और अपनी क्षमताओं अनुभव के आधार पर उसे पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध रहती हैं। भले ही यह प्रतिबद्धता वे अभिव्यक्त न करें परन्तु कार्य के दौरान इस चीज का एहसास हर समय होता रहता है। जब पारिवारिक सामाजिक मानकों का निर्वहन किसी भी परिवार में नहीं हो पाता तो सबसे अधिक मायूस घर परिवार को संचालित करने की अहम भूमिका निभाने वाली महिला मायूस और दुःखी होती है। इस तरह महिलाओं के सामने ये कड़िनाइयाँ मुह बाये खड़ी रहती हैं जिसके सम्बन्ध में वे न किसी से कह पाती हैं और न ही वे किसी का निदान कर पाती हैं इस आलेख में प्रस्तुत है।

e[; 'kCn %&अनुसूचित, जाति, महिलाओं, सामाजिक, चुनौतियाँ, निर्वहन, पारिवारिक, प्रतिबद्धता आदि।

iLrkouk %&

अनुसूचित जाति की महिलाओं को भारत में ''जाति, लिंग और आर्थिक स्थिति'' तीनों स्तरों पर भेदभाव का सामना करना पड़ता है। इसे अक्सर "दोहरे/तिहरे भेदभाव" के रूप में समझा जाता है। भारत के संविधान में समानता के अधिकार और विशेष संरक्षण का प्रावधान है और National Commission for Scheduled Castes जैसी संस्थाएँ निगरानी के लिए बनी हैं, फिर भी जमीनी स्तर पर कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

सार्वजनिक स्थानों, मंदिरों, पानी के स्रोतों और सामुदायिक संसाधनों तक सीमित पहुँच। जाति–आधारित अपमान, सामाजिक बहिष्कार और कभी–कभी शारीरिक/यौन हिंसा। कानून होने के बावजूद शिकायत दर्ज कराने और न्याय पाने में बाधाएँ। पितृसत्तात्मक सोच के कारण शिक्षा, स्वास्थ्य और निर्णय–निर्माण में कम भागीदारी। बाल विवाह, दहेज, घरेलू हिंसा जैसी समस्याओं का अधिक प्रभाव। परिवार की आर्थिक स्थिति और सामाजिक पूर्वाग्रह के कारण स्कूल छोड़ने की दर अधिक। उच्च शिक्षा में प्रतिनिधित्व कम, मार्गदर्शन और सुरक्षित माहौल की कमी।

असंगठित क्षेत्र, दिहाड़ी मजदूरी या कम वेतन वाले कार्यों में अधिक संलग्नता। भूमि/संपत्ति के स्वामित्व की कमी, जिससे आर्थिक निर्भरता बनी रहती है। मातृ स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच। कुपोषण और स्वच्छता सुविधाओं की कमी, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। राजनीतिक प्रतिनिधित्व और आवाज़ पंचायत/स्थानीय निकायों में आरक्षण के बावजूद वास्तविक निर्णय–शक्ति पर पुरुषों या उच्च जातियों का प्रभाव। सामाजिक दबाव के कारण स्वतंत्र नेतृत्व में बाधा विद्यमान है।

DOI: 10.48175/IJARSCT-31264

महिलाओं के सामाजिक चुनौतियाँ कई रूप में सामने आती हैं जिनमें पारिवारिक गतिविधियों का संचालन और संसाधनों का संग्रह प्रमुख होते हैं। उत्सव आयोजन के दौरान अपने प्रियजनों और अतिथियों का स्वागत सम्मान करने के लिए मनचाही वस्तुओं को प्रदान करने तथा स्वागत के लिए अभीष्ठ संसाधनों का अभाव रहता है। जिसके प्रतिकूल आर्थिक विसंगति तथा परिवार के मुखिया के द्वारा संसाधन उपलब्ध न कराया जाना तथा निर्णय अधिकार न प्राप्त होना भी होता है। इस तरह महिलाओं के सामने प्रचुर कठिनाईयां सामाजिक कार्यों के संचालन के दौरान आती है। ऐसा देखा जाता है कि महिलाएं अपने लिए होने वाली कमियों को सहजता से टाल देती हैं परन्तु परिजनों और आगन्तुकों के लिए वे इस तरीके से कमियों को चुनौती के रूप में महसूस करती हैं जिसका प्रभाव उनके जीवन शैली पर पड़ता है। यह प्रभाव उनकी शक्ति और सामर्थ्य को भी प्रभावित करता है।

वर्तमान समय में समाज तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। जिसके कारणों में आधुनिकता, शिक्षा, बढ़ता औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं महिलाओं को संविधान द्वारा प्रदान किए गए अधिकारों के कारण महिलाओं की स्थिति में गतिशीलता देखी जा रही है। परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली अनुसूचित जाति परिवार में सामाजिक खुलापन एवं गतिशीलता एक समस्या के रूप में देखी जा रही है वही दलित परिवारों में भी पुरुषों की तुलना में महिलाओं को महिलाओं के अतिरिक्त अनुसूचित जाति परिवार की महिला होने के कारण परंपरागत सामाजिक मानदंडों की दोहरी मार झेलनी पड़ती है।

ग्रामीण परिवार में अनुसूचित जाति परिवारों द्वारा जातिगत मान्यताओं के अनुरूप ही पारिवारिक सामाजीकरण किया जाता है, जो महिलाओं की गतिशीलता को प्रभावित करता है। कई सामाजिक बंधनों, बर्बर अत्याचारों, धर्मशास्त्र एवं धर्म आचार्यों द्वारा खड़े किए गए अवरोध झेलते हुए संकट पूर्ण मार्गों से गुजरना पड़ा है। यही नहीं धर्मशास्त्रों की बदौलत 21वीं सदी की ओर बढ़ते समय में भारतीय नारी गुलामी की बेड़ियों से अभी भी मुक्त नहीं हो पाई है। महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव शोषण एवं अत्याचार के कारणों को जाना और उन्हें दूर करने के प्रयास किए। अनुसूचित जाति का तात्पर्य शेड्यूल्ड कास्ट शब्द का हिंदी रूपांतरण हैं। अनुसूचित जाति एक संवैधानिक शब्द है, क्योंकि संविधान में इसे पूर्ण वैधानिकता प्रदान की गई है।

संविधान के अनुच्छेद 341 एक में कहा गया है कि राष्ट्रपति किसी राज्य संघ राज्य क्षेत्र के संबंध में और जहां वह राज्य है, वहां उसके राज्यपाल से परामर्श करने के पश्चात लोक अधिसूचना द्वारा उन जातियों, मूल वन से हैं, जो अनुसूचित जाति के भागों या उनमें को निर्दिष्ट कर सकेगा, जिन्हें इस संविधान के प्रयोजनों के लिए यथास्थिति उस राज्य संघ राज्य क्षेत्र के संबंध में अनुसूचित जाति समझा जाएगा। अनुसूचित जातियां हिंदू समाज व्यवस्था की अस्पष्ट जातीय है, निर्धारित चतुर्वर्ण व्यवस्था से पृथक ऐसे लोगों का समुदाय है, जो रंग के काले तथा घृणित पेशे से संबंध थे, अस्पृश्य कहे जाते थे। प्राचीन धर्म ग्रंथों मंर इन्हें चांडाल, शूद्र, अछूत आदि अनेक नामों से संबोधित किया गया है। इन जातियों को सबसे निम्न स्तर का व्यवसाय प्रदान किया गया है एवं समाज में इनकी निम्नतम प्रस्थिति थी, चारों वर्णों से पृथक् होने के कारण इन्हें पंचम वर्ण नाम से भी संबोधित किया गया है। महिलाओं की स्थिति एक चिंताजनक विषय है, कि हमारे देश में स्त्री जाति का संबंध समाज के एक ऐसे वर्ग या समुदाय से है जिसकी दशा उनकी सामाजिक कुरीतियों एवं अपराधों के कारण अत्यधिक दयनीय बन चुकी है।

प्रस्तुत आलेख में रीवा जिले की हुजूर तहसील ग्रामीण के अन्तर्गत अध्ययन किया गया है। जिसका क्षेत्रफल 673 वर्ग किलोमीटर, स्त्री/पुरुष की कुल आबादी 229104, जिसमें ग्रामीण पुरुष जनसंख्या 118,949 तथा महिला ग्रामीण जनसंख्या 110155, जिसकी साक्षरता 73.59 प्रतिशत है। अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या 16.22 प्रतिशत है।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, February 2026 Impact Factor: 8.2

प्रस्तुत शोध आलेख में निदर्शन विधि से 50 अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति की चुनौतियों से सम्बन्धित जानकारी साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त की गई।

ग्रामीण तहसील हुजूर से समता के अधिकार द्वारा बाबा साहब महिलाओं को अपने पैरों द्वारा खड़ा होते देखना चाहते थे। उनका मत था कि ''सामाजिक क्रांति एवं परिवर्तन में स्त्रियों को पुरुषों का सहयोगी बनाना चाहिए। समाज के आधे अंग को जागृत किए बिना सामाजिक क्रांति अंसभव है। सामाजिक पुर्नजागरण, नारी स्वतन्त्रता एवं उनके विकास से ही सम्भव होगा। भारत में महिलाओं के आरक्षण का बिल लम्बे समय से विचाराधीन अवस्था में पड़ा हुआ है। आरक्षण की वर्तमान संवैधानिक व्यवस्थाओं एवं उच्चतम न्यायालय द्वारा प्रतिपादित मान्य सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए मेरा विचार है कि महिलाओं का आरक्षण सामान्य, अन्य पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति के संवर्गों में समान्तर आरक्षण की व्यवस्था मान्य कर देना चाहिए। ऐसा करने में किसी भी प्रकार की संवैधानिक मान्य कर देना चाहिए। ऐसा करने में किसी भी प्रकार की संवैधानिक अड़चने नहीं आयेगीं।

आधुनिक युग की भारतीय नारी इस भार का अनुभव कर रही है जो बाहर से हर क्षण को भर कर भीतर की हर सांस को खाली कर देता है। स्वतन्त्रता सबके लिए जीने की शक्ति न बन सके तो मनुष्य के लिए प्रसाधन मात्र रह जायेगी और सब के लिए जीने की विघुत, सहानुभूति के जल में उत्पन्न होती है। भारतीय महिला में जो एक सहज विवके है वह यदि जागृत रहे, तो न कोई कर्म क्षेत्र निश्चित हो सकेगा और न नवीन पीसमाज के हर क्षेत्र में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में महिलाएँ प्रगति कर रही हैं। शिक्षा इसमें महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हो रही है। वे धार्मिक विरोध करने लगी, वे मानसिक रूप से सुदृढ़ के लिये वित्तीय सहायता आदि तरह के कार्यक्रम है।

फिर भी समाज की निम्न दृष्टि महिलाओं के नेतृत्व को स्वीकार नहीं कर रही है। असमतावादी समाज में उनकी प्राप्ति तब तक सम्भव नहीं है जब तक शोषित वर्ग को सहायता पहुँचाने वाले विशेष प्रयास नहीं किये जायें। यह सत्य है कि वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति में अपेक्षाकृत बदलाव आये हैं। लेकिन फिर भी वह अनेक स्थानों पर पुरूष प्रधान मानसिकता से पीड़ित हो रही है।

rkfydk Øekd&1

efgykvk dh ikfjokfjd fLFkfr e ifjorlu

Ø-	fooj.k	l[;k	ifr'kr
1.	हाँ	32	64.00
2.	नहीं	15	30.00
3.	पता नहीं	3	6.00
	;kx	50	100-00

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, February 2026
Impact Factor: 8.2

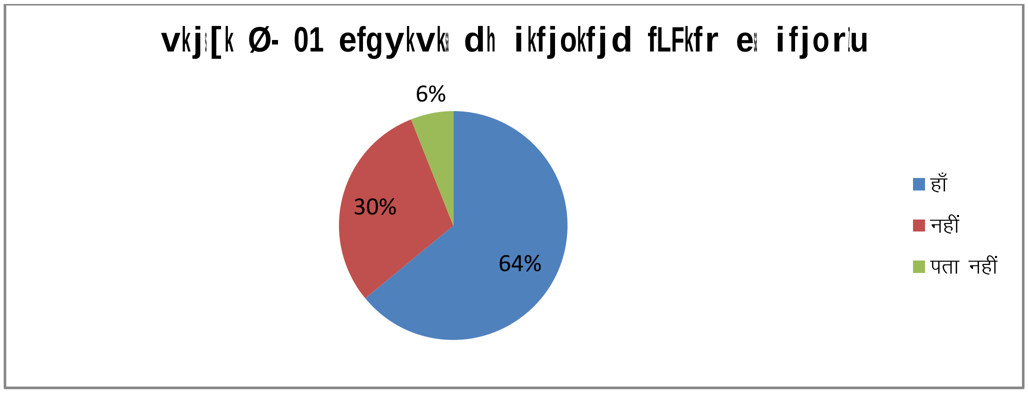

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की पारिवारिक स्थिति में सुधार हो रहा है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षात्कर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 64.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की पारिवारिक स्थिति में सुधार हो रहा है, 30.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की पारिवारिक स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है जबकि 6.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की पारिवारिक स्थिति में सुधार के प्रति पता नहीं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 64.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की पारिवारिक स्थिति में सुधार हो रहा है।

rkfydk Øekad&2

efgykvksa dh lkekftd fLFkfr esa cnyko

Ø-	fooj.k	la[;k	izfr'kr
1.	हाँ	34	68.00
2.	नहीं	14	28.00
3.	पता नहीं	2	4.00
	;ksx	50	100-00

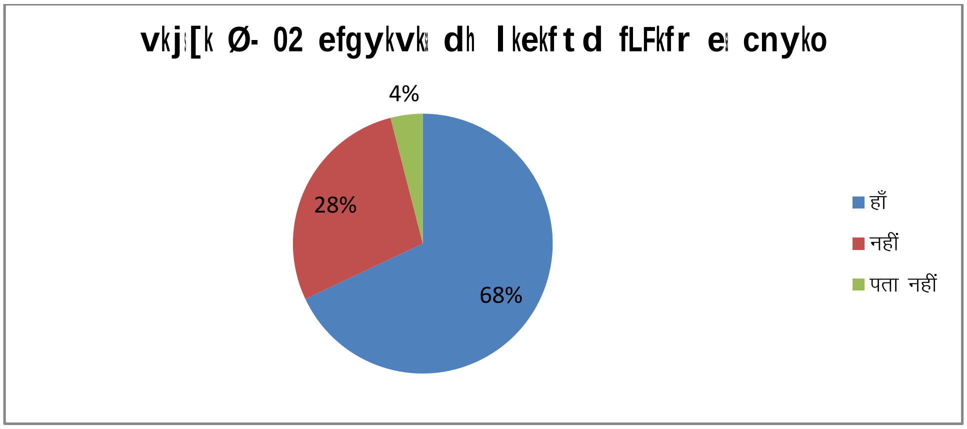

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, February 2026 Impact Factor: 8.2

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार हो रहा है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 68.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार हो रहा है, 26.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है जबकि 68.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार के प्रति पता नहीं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 63.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार हो रहा है।

rkfydk Øekd&3

efgykvk dh vkfFkd fLFkfr e ifjorlu

Ø-	fooj.k	l[;k	ifr'kr
1.	हाँ	28	56.00
2.	नहीं	20	40.00
3.	पता नहीं	2	4.00
	;kx	**50**	**100-00**

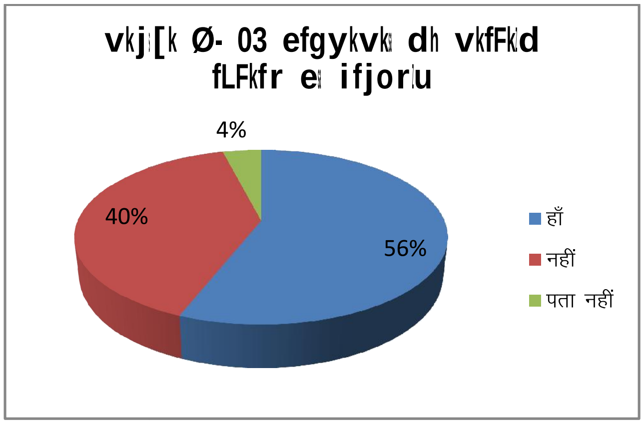

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 56.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है, 40.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है जबकि 4.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार के प्रति पता नहीं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 56.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है।

rkfydk Øekad&4

ijEijkoknh efgyk,¡ vk/kqfudrk dh vksj vxzlj

Ø-	fooj.k	la[;k	izfr'kr
1.	हाँ	33	66.00
2.	नहीं	15	30.00
3.	पता नहीं	2	04.00
	;ksx	**50**	**100-00**

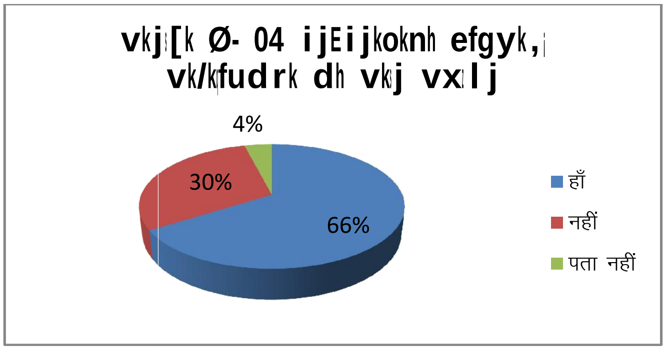

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की महिलाएँ परम्परावादी है परन्तु आधुनिकता की ओर अग्रसर है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 66.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाएँ परम्परावादी है परन्तु आधुनिकता की ओर अग्रसर है, 30.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाएँ परम्परावादी है परन्तु आधुनिकता की ओर अग्रसर नहीं हैं जबकि 04.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाएँ परम्परावादी है परन्तु आधुनिकता की ओर अग्रसर है के प्रति पता नहीं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 66.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाएँ परम्परावादी है परन्तु आधुनिकता की ओर अग्रसर है।

rkfydk Øekad&5

jktuhfrd tkx#drk esa efgykvksa dh deh

Ø-	fooj.k	la[;k	izfr'kr
1.	हाँ	19	38.00
2.	नहीं	28	56.00
3.	पता नहीं	03	6.00
	;ksx	**50**	**100-00**

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, February 2026
Impact Factor: 8.2

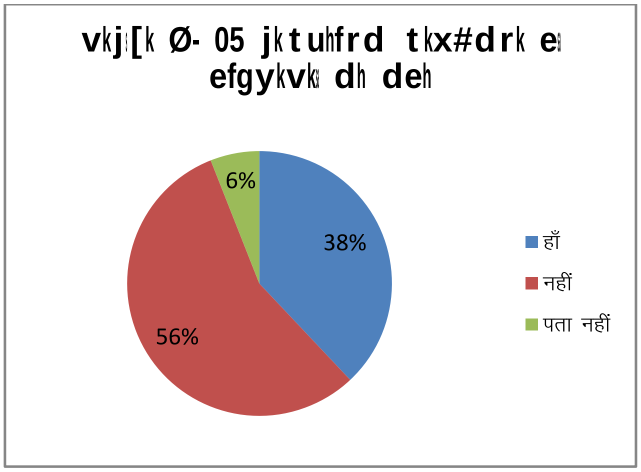

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं में राजनीतिक जागरुकता की कमी है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 38.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं में राजनीतिक जागरुकता की कमी है, 56.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं में राजनीतिक जागरुकता की कमी नहीं हैं जबकि 6.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं में राजनीतिक जागरुकता की कमी है के प्रति पता नहीं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 38.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं में राजनीतिक जागरुकता की कमी नहीं हैं।

rkfydk Øekad&6

efgykvk d jkstxkj volj ka e of)

Ø-	fooj.k	l[;k	ifr'kr
1.	हाँ	32	64.00
2.	नहीं	17	34.00
3.	पता नहीं	1	2.00
;kx		50	100-00

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो रही है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 64.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो रही है, 34.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के रोजगार के अवसरों में वृद्धि नहीं हो रही हैं जबकि 2.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो रही है के प्रति पता नहीं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 64.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो रही है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, February 2026
Impact Factor: 8.2

rkfydk Øekd 7

cVk&cVh d fookg e ngt dk iHkkoh pyu

Øekd	fooj.k	l[;k	ifr'kr
1.	हाँ	28	56.00
2.	नहीं	22	44.00
	योग	50	100.00

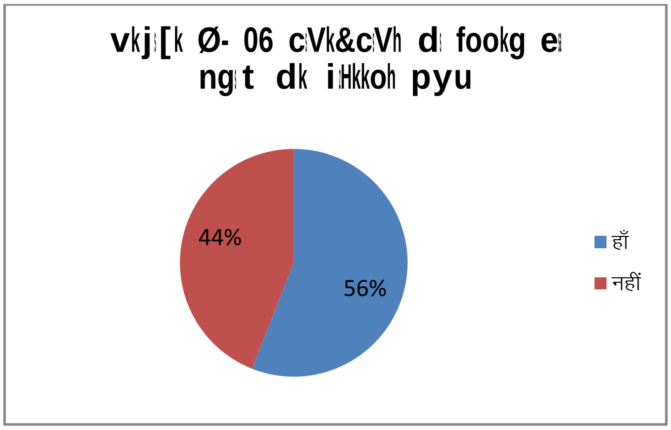

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि पढ़ी–लिखी लड़कियों के विवाह में दहेज का लेन–देन होता है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 56.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के पढ़ी लिखी लड़कियों के विवाह में दहेज का लेन–देन होता है जबकि 44.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के पढ़ी लिखी लड़कियों के विवाह में दहेज का लेन–देन नहीं होता है,

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 56.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के पढ़ी लिखी लड़कियों के विवाह में दहेज का लेन–देन होता है। इसके पीछे आज की आधुनिकता को देखते हुए हर बच्चे के माँ–बाप विवाह के समय बच्चों के खुशियों के लिए अपनी इच्छानुसार दहेज का लेन–देन देखने को मिला है।

rkfydk Øekd 8

/kkfed eU;rkvk ij efgykvk dk fo'okl

Øekd	fooj.k	l[;k	ifr'kr
1.	हाँ	44	88.00
2.	नहीं	6	12.00
	;kx	**50**	**100-00**

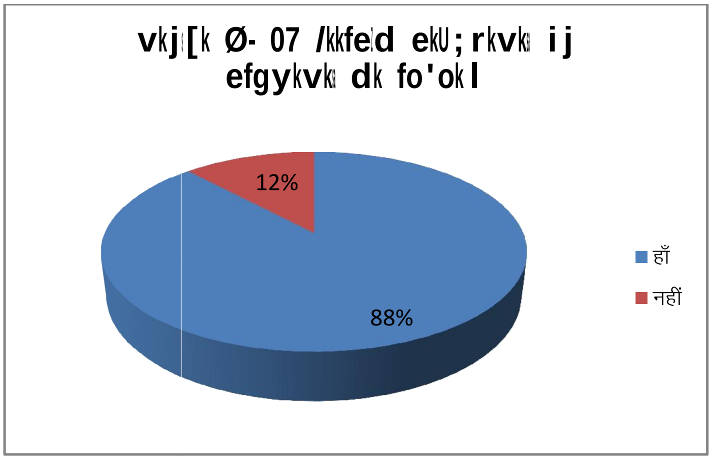

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि धार्मिक मान्यताओं पर विश्वास करते हैं के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 88.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के धार्मिक मान्यताओं पर विश्वास करते हैं जबकि 12.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के धार्मिक मान्यताओं पर विश्वास नहीं करते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 88.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के धार्मिक मान्यताओं पर विश्वास करते हैं।

rkfydk Øekd 9

Hkr&ir] noh&nork ij efgykvk dk fo'okl

Øekd	fooj.k	l[;k	ifr'kr
1.	हाँ	41	82.00
2.	नहीं	9	18.00
	योग	**50**	**100-00**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि देवी देवता भूत प्रेत पर क्या आपका विश्वास है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 82.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के देवी देवता भूत प्रेत पर क्या आपका विश्वास है जबकि 18.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के देवी देवता भूत प्रेत पर क्या आपका विश्वास नहीं है।

अध्ययनगत समूह के अंतर्गत उत्तरदाताओं से उनके परिवार के सदस्यों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के संबंध में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है जो निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है :—

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 6, Issue 2, February 2026

Impact Factor: 8.2

rkfydk Øekd&10

efgykvksa dh 'kS{kf.kd fLFkfr esa lq/kkj

Ø-	fooj.k	la[;k	izfr'kr
1.	हाँ	31	62.00
2.	नहीं	16	32.00
3.	पता नहीं	3	9.00
;ksx		50	100-00

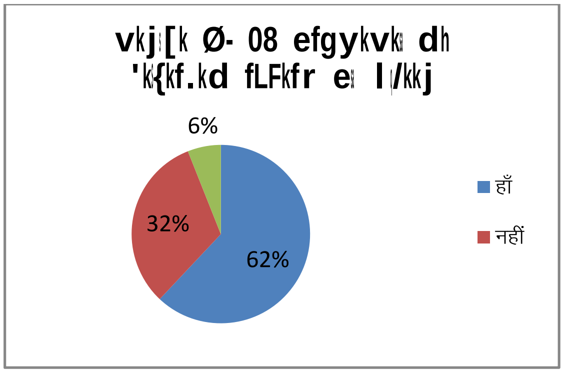

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति में सुधार हो रहा है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 62.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति में सुधार हो रहा है, 32.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है जबकि 9.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति में सुधार के प्रति पता नहीं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 62.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति में सुधार हो रहा है।

rkfydk Øekd&11

efgykvksa dks ;kstukvksa ds fØ;kUo;u ls vkfFkZd ifjorZu

Ø-	fooj.k	la[;k	izfr'kr
1.	हाँ	37	74.00
2.	नहीं	12	24.00
3.	पता नहीं	1	2.00
;ksx		50	100-00

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, February 2026
Impact Factor: 8.2

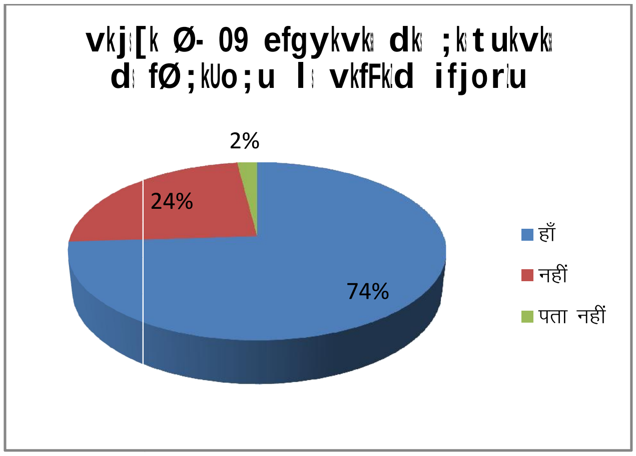

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं को योजनाओं के क्रियान्वयन से आर्थिक परिवर्तन हो रहा है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 74.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं को शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन से आर्थिक परिवर्तन हो रहा है, 24.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं को शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन से आर्थिक परिवर्तन नहीं हो रहा है जबकि 2.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं को शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन से आर्थिक परिवर्तन हो रहा है के प्रति पता नहीं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 74.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं को शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन से आर्थिक परिवर्तन हो रहा है।

rkfydk Øekd&12

efgykvk dk ;ktukvk d fØ;kUo;u l lkekftd ifjorlu

Ø-	foojk.k	l[;k	ifr'kr
1.	हाँ	35	70.00
2.	नहीं	14	28.00
3.	पता नहीं	1	2.00
	;kx	**50**	**100-00**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं को योजनाओं के क्रियान्वयन से आर्थिक परिवर्तन हो रहा है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 70.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं को शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन से आर्थिक परिवर्तन हो रहा है, 28.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं को शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन से आर्थिक परिवर्तन नहीं हो रहा है जबकि 2.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं को शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन से आर्थिक परिवर्तन हो रहा है के प्रति पता नहीं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, February 2026
Impact Factor: 8.2

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 70.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं को शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन से आर्थिक परिवर्तन हो रहा है।

rkfydk Øekd&13

efgykvksa esa LokLF; lacU/kh leL;k,¡ fo|eku

Ø-	fooj.k	la[;k	izfr'kr
1.	हाँ	28	56.00
2.	नहीं	17	34.00
3.	पता नहीं	5	10.00
	;kx	**50**	**100-00**

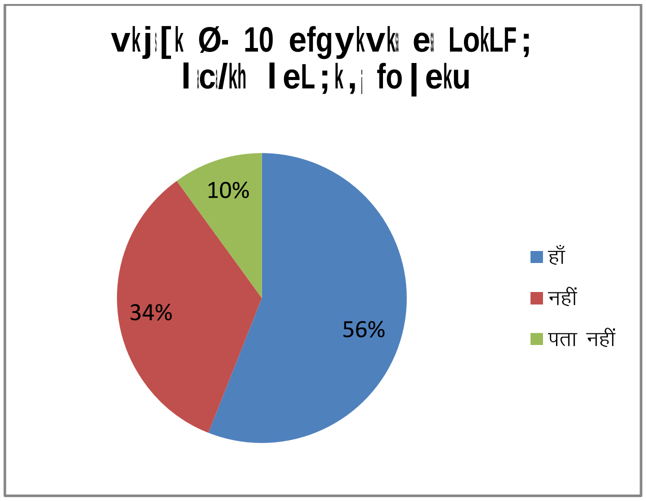

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ विद्यमान हैं के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 56.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ विद्यमान हैं, 34.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ विद्यमान नहीं हैं जबकि 10.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ विद्यमान हैं के प्रति पता नहीं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 56.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ विद्यमान हैं।

rkfydk Øekd&14

vu|lfpr tkfr dh efgyk;a viu LokLF; d ifr tkx#d ugh

Ø-	fooj.k	l[;k	ifr'kr
1.	हाँ	20	40.00
2.	नहीं	28	56.00
3.	पता नहीं	2	4.00
	;kx	**50**	**100-00**

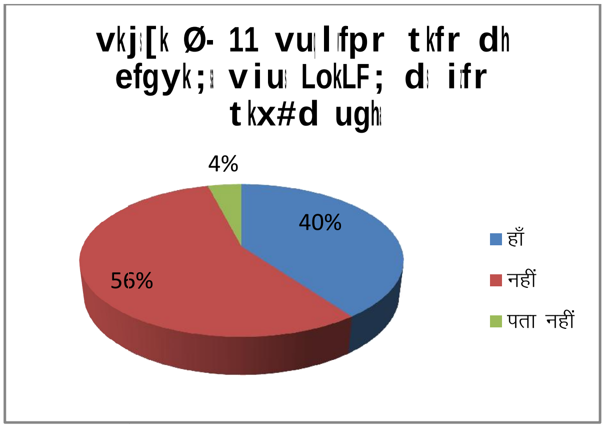

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की महिलायें अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत जागरुक नहीं है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 40.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हाँ में जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलायें अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत जागरुक नहीं है 56.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलायें अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत जागरुक नहीं है जबकि 2.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ विद्यमान हैं के प्रति पता नहीं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 56.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलायें अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत जागरुक नहीं है।

rkfydk Øekd 15

vki cPpk dk i<kuk fy[kkuk pkgr g

Øekd	fooj.k	l[;k	ifr'kr
1.	हाँ	33	66.00
2.	नहीं	17	34.00
	योग	50	100.00

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, February 2026
Impact Factor: 8.2

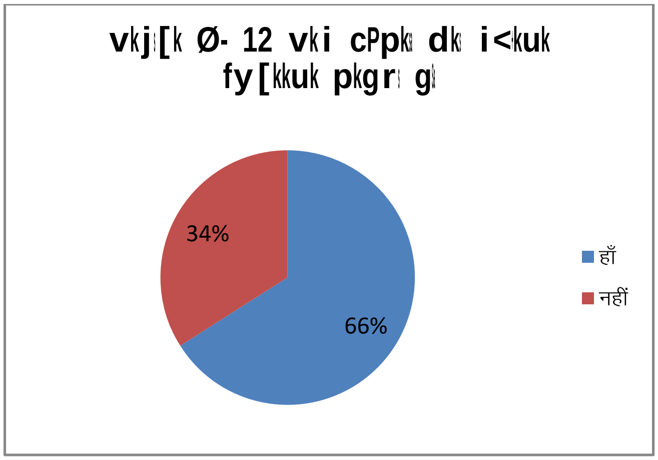

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि आप बच्चों को पढ़ाना लिखाना चाहते है के प्रति 50 उत्तरदाताओं से साक्षातकर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि 66.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के आप बच्चों को पढ़ाना लिखाना चाहते हैं जबकि 34.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के आप बच्चों को पढ़ाना लिखाना नहीं चाहते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 66.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि अनुसूचित जाति की महिलाओं के आप बच्चों को पढ़ाना लिखाना चाहते हैं। इसके पीछे प्रत्येक परिवार में माँ–बाप का मुख्य कर्तव्य है कि वर्तमान परिदृश्य में बच्चों को पढ़ाना–लिखाना अवश्य चाहते हैं जिससे समाज की मुख्य धारा से जुडकर अपना जीवन–यापन आसानी से कर सकें और परिवार का भरण–पोषण कर सके साथ ही प्रदेश एवं देश के लिए सकारात्मक कार्यों को अच्छी तरह से निर्वहन कर सकें।

fu"d"k

इस प्रकार कहा जा सकता है कि आधुनिकता से प्रभावित अधिकांश वही महिलाएँ हैं जो सामाजिक शक्ति संरचना में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इसी प्रकार आयगत स्थिति के आधार पर महिला आधुनिकता से अधिक प्रभावित हैं जो उच्च आय वाली हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दौर में भारत में नारी की स्थिति बेहतर हुई है। आज राजनीति से लेकर टेक्नोलॉजी तक सभी क्षेत्रों में स्त्रियाँ अपनी सक्रिय एवं सफल उपस्थिति का एहसास करा रही हैं। महिलाओं में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा बहुत प्रबल हो गयी है वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना चाहती है। इससे उसमें आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह प्रगति की सीढ़ी पर चढ़ती जायेगी एवं समाज में फली बुराई रूपी अन्धकार को दूर कर सकेगी। नारियों के लिये आत्म अभिव्यक्ति और आत्म सन्तुष्ट के अवसर अनुचित रूप से सीमित रखे गये हैं। मशीनीयुग ने घर से बाहर ही वस्तु उत्पादन इतना अधिक बढ़ा दिया है। कि अंशतः आर्थिक आवश्यकता के चलते महिलायें अब घर से बाहर काम अपनाने लगी हैं।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-31264

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, February 2026
Impact Factor: 8.2

l|>ko %&

- कानूनी संरक्षण का प्रभावी क्रियान्वयन'' (जैसे अत्याचार निवारण कानून)।
- 'शिक्षा और कौशल विकास'' के लिए छात्रवृत्ति व आवासीय सुविधाएँ।
- स्वयं सहायता समूह और सूक्ष्म–वित्त के माध्यम से आर्थिक सशक्तिकरण।
- सामाजिक जागरूकता अभियान जाति और लैंगिक समानता पर।
- स्थानीय स्तर पर निगरानी और सहायता के लिए सरकारी व गैर–सरकारी संस्थाओं की सक्रिय भूमिका का निवर्हन कराना।

lanHkZ lwph %&

1. डॉ. जी०आर०मदन परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र पृ.क्र. 184 विवेक प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली 2005
2. डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव, 21वीं सदी का महिला सशक्तिकरणः मिथक एवं यथार्थ, ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली, 2008 द्य
3. मानचन्द्र खंडेला, महिला सशक्तिकरण सिद्धांत एवं व्यवहार, अविष्कार पब्लिशर्स जयपुर, 1998
4. सामाजिक विकल्प समाज विज्ञान शोध पत्रिका 2007–08
5. द वर्किंग वीमेन द पोजिशन आफ विमन इन इण्डिया बम्बई 1973
6. वुमेनस इम्प्लारमेण्ट एण्ड देयर केनिलियल रोल इन इण्डिया 1996
7. वीमन वर्कर्स इन इण्डिया बम्बई एशिया पब्लिकेशन हाऊस 1960